REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2025

२१ वीं सदी में भारत की सामाजिक स्थिती

डॉ . रेनू चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
विभाग - समाजशास्त्र , वर्धमान कॉलेज , बिजनौर.

प्रास्ताविक:

२१ वीं सदी ने भारत को एक ऐसे वैश्विक मंच पर ला खड़ा किया है, जहाँ वह न केवल आर्थिक विकास की नई गाथा लिख रहा है, बल्कि सामाजिक ताने-बाने में भी अभूतपूर्व बदलावों का साक्षी बन रहा है। पिछली शताब्दी की चुनौतियों को पीछे छोड़ते हुए, भारत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। हालाँकि, यह प्रगति असमान रही है, और देश आज भी गरीबी, असमानता, जातिगत भेदभाव, सांप्रदायिक तनाव और पर्यावरण संबंधी चिंताओं जैसी कई सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। यह शोध निबंध २१वीं सदी के भारत की सामाजिक स्थिति का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, जिसमें इसकी प्रमुख विशेषताओं, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डाला जाएगा। हम इस बात की पड़ताल करेंगे कि कैसे वैश्वीकरण, शहरीकरण, डिजिटलीकरण और जनसांख्यिकीय परिवर्तन ने भारतीय समाज को नया आकार दिया है, और इसके परिणामस्वरूप कौन सी नई सामाजिक संरचनाएँ, मूल्य और व्यवहार पैटर्न उभरे हैं।

कीवर्ड्स:

भारत की सामाजिक स्थिति, २१वीं सदी, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक असमानता, जातिवाद, महिला सशक्तिकरण, शहरीकरण, डिजिटलीकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक न्याय, जनसांख्यिकीय लाभांश, सामाजिक सुरक्षा

शोध निबंध का उद्देश:

१. २१ वीं सदी में भारतीय समाज में आए प्रमुख परिवर्तनों का विस्तृत विश्लेषण करना।
२. आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक असमानता और गरीबी की निरंतरता का पता लगाना।
३. जातिगत भेदभाव और सांप्रदायिक तनाव जैसे पारंपरिक सामाजिक मुद्दों की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना।
४. महिला सशक्तिकरण की दिशा में हुई प्रगति और अभी भी मौजूद चुनौतियों पर प्रकाश डालना।
५. शहरीकरण और डिजिटलीकरण के भारतीय समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

६. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में हुई प्रगति और पहुँच की बाधाओं का आकलन करना।
७. भारतीय समाज पर पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की जाँच करना।
८. युवा जनसांख्यिकी और जनसांख्यिकीय लाभांश के सामाजिक निहितार्थों का विश्लेषण करना।
९. सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
१०. भविष्य के लिए संभावित सामाजिक परिदृश्यों और नीतिगत आवश्यकताओं पर विचार करना।

विषय विवेचन:

२१वीं सदी में भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए हैं, जो बहुआयामी और जटिल हैं।

1. आर्थिक असमानता और गरीबी: गरीबी भारत में प्रमुख सामाजिक समस्याओं में से एक है। गरीबी का मूल अर्थ है मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन, आश्रय और कपड़े को पूरा करने के लिए धन के पर्याप्त साधनों की अनुपलब्धता। गरीबी न केवल सामाजिक-आर्थिक बल्कि प्रकृति में भावनात्मक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भी है।

चूंकि भारत सबसे अधिक आबादी वाले देशों में से एक है, इसलिए यह गरीबी की ओर ले जाने वाले प्रमुख कारकों में से एक है। ग्रामीण क्षेत्र सबसे ज्यादा इससे प्रभावित होते हैं। गरीबी मूल रूप से तीन चीजों को इंगित करती है- आर्थिक निर्भरता, आर्थिक अपर्याप्तता और आर्थिक असमानता।

भारत ने भले ही तीव्र आर्थिक विकास दर हासिल की हो, लेकिन धन और आय का वितरण अत्यधिक असमान बना हुआ है। शहरी-ग्रामीण विभाजन, अमीर-गरीब का बढ़ता अंतर और हाशिए पर पड़े समुदायों के बीच गरीबी एक बड़ी चुनौती है। लाखों लोग अभी भी बुनियादी सुविधाओं जैसे स्वच्छ पानी, स्वच्छता और आवास से वंचित हैं। असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों की बड़ी संख्या, अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा और बढ़ती हुई बेरोजगारी भी इस असमानता को बढ़ा रही है।

भारत में गरीबी के कारण:-

१. **बेरोजगारी:** भारत में बेरोजगारी की दर काफी अधिक है, जिसके परिणामस्वरूप लोग गरीबी रेखा के नीचे आते हैं।
२. **कीमत में वृद्धि:** ऐसा कहा जाता है कि अमीर अमीर हो रहे हैं, और गरीब गरीब हो रहे हैं। यह सिर्फ उन वस्तुओं की बढ़ती कीमत के कारण है जो गरीब बर्दाश्त नहीं कर सकते।
३. **खेती में कम उत्पादकता:** खेती भारत के लोगों के लिए आजीविका के सबसे प्रमुख साधनों में से एक है, और मौसमी परिवर्तनों के कारण, कृषि में उत्पादन काफी अनिश्चित है। यह भी गरीबी में योगदान देने वाला कारक है।

2. जातिगत भेदभाव की निरंतरता: भारतीय संविधान ने जातिगत भेदभाव को समाप्त कर दिया है, फिर भी व्यवहार में यह अभी भी समाज के कई हिस्सों में व्याप्त है। दलितों और अन्य पिछड़ी जातियों के प्रति भेदभाव शिक्षा, रोजगार और सामाजिक मेलजोल में देखा जा सकता है। हालाँकि, शहरी क्षेत्रों में और शिक्षित वर्गों में जाति की कठोरता में कुछ कमी आई है, लेकिन ग्रामीण भारत में यह अभी भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक बाधा बनी हुई है। अंतर-जातीय विवाहों में वृद्धि और जातिगत पहचान को लेकर नए आंदोलनों का उदय भी देखा जा रहा है।

3. महिला सशक्तिकरण और चुनौतियाँ: २१वीं सदी में महिलाओं ने शिक्षा, राजनीति, खेल और कॉर्पोरेट जगत में उल्लेखनीय प्रगति की है। संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, और कई महिलाएँ उच्च पदों पर आसीन हुई हैं। हालाँकि, लैंगिक असमानता अभी भी एक प्रमुख मुद्दा है। कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, कार्यस्थल पर भेदभाव और कम मजदूरी अभी भी व्यापक समस्याएँ हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराधों में वृद्धि चिंता का विषय है, और सामाजिक मानसिकता में बदलाव की धीमी गति भी एक चुनौती है।

महिला सुरक्षा चिंता के कारण:-

१. अंधेरा होने पर सड़कों पर असुरक्षित महसूस करने के अलावा, महिलाएं कई अलग-अलग महिला अधिकारों के उल्लंघन से गुजरती हैं।
२. महिलाओं की तस्करी, दहेज हत्या, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, महिलाओं को केवल बेटों को जन्म देने के लिए मजबूर करना, कन्या भ्रूण हत्या, जबरन बेदखली और बहिष्करण, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, बलात्कार दुनिया भर में प्रचलित हैं।
३. शिक्षा के रूप में बुनियादी कुछ जो एक लड़के के लिए सामान्य हो सकता है, अभी भी भारत में कई लड़कियों के लिए एक सपना है।

4. शहरीकरण और उसके सामाजिक प्रभाव: भारत तीव्र गति से शहरीकरण कर रहा है। महानगरों में जनसंख्या का दबाव बढ़ा है, जिससे बुनियादी ढाँचे, आवास, स्वच्छता और प्रदूषण संबंधी समस्याएँ पैदा हुई हैं। शहरीकरण ने नए सामाजिक वर्गों को जन्म दिया है, और पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं को भी प्रभावित किया है। एकाकी परिवार की अवधारणा बढ़ी है, और सामुदायिक संबंधों में कमी देखी गई है। ग्रामीण-शहरी प्रवास ने ग्रामीण क्षेत्रों में जनसांख्यिकीय असंतुलन पैदा किया है।

5. डिजिटलीकरण और सूचना क्रांति: इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी के प्रसार ने भारतीय समाज में क्रांति ला दी है। डिजिटल इंडिया पहल ने सरकारी सेवाओं को सुलभ बनाया है और शिक्षा, स्वास्थ्य और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है। सोशल मीडिया ने सूचना के प्रसार को तेज किया है और अभिव्यक्ति के नए मंच प्रदान किए हैं। हालाँकि, डिजिटल डिवाइड, साइबर अपराध, गलत सूचना का प्रसार और व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

6. शिक्षा और कौशल विकास: शिक्षा तक पहुँच बढ़ी है, खासकर प्राथमिक स्तर पर। उच्च शिक्षा में भी नामांकन में वृद्धि हुई है। हालाँकि, शिक्षा की गुणवत्ता, पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और रोजगारपरकता अभी भी चिंता का विषय है। कौशल विकास में निवेश की कमी के कारण एक बड़ी युवा आबादी को रोजगार के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य इन कमियों को दूर करना है, लेकिन इसके पूर्ण प्रभाव का आकलन किया जाना बाकी है।

7. स्वास्थ्य सेवा: स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और गुणवत्ता में सुधार हुआ है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में और गरीबों के लिए यह अभी भी एक चुनौती है। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी आई है, लेकिन कुपोषण, संक्रामक रोग और गैर-संचारी रोगों का दोहरा बोझ अभी भी बना हुआ है। आयुष्मान भारत जैसी योजनाएँ सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में एक कदम हैं। भारत की युवा जनसंख्या एक जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान करती है, लेकिन यदि उन्हें सही शिक्षा, कौशल और रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं, तो यह एक जनसांख्यिकीय बोझ बन सकता है।

भारत में खराब स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के कारण:-

१. **बुनियादी ढाँचे की कमी:** भारत पिछले कुछ समय से अच्छी तरह से सुसज्जित चिकित्सा संस्थानों की कमी के रूप में बुनियादी ढाँचे की कमी से जूझ रहा है। इसके अलावा, ऐसी चिकित्सा शिक्षण या प्रशिक्षण सुविधाओं के निर्माण की दर समय की आवश्यकता की तुलना में कम रहती है।

२. **कुशल और प्रशिक्षित जनशक्ति की कमी:** भारत में सबसे अधिक दबाव वाली समस्याओं में से एक चिकित्सा धारा में प्रशिक्षित जनशक्ति की भारी कमी है, इसमें डॉक्टर, नर्स, पैरामेडिक्स और प्राथमिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता शामिल हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति चिंताजनक बनी हुई है, जहां भारत की लगभग ६६ प्रतिशत आबादी रहती है

३. **अप्रबंधनीय रोगी-भार:** कोविड-१९ महामारी के प्रकोप से पहले भी, स्वास्थ्य सुविधाएं असहनीय रोगी-भार के कारण तनाव महसूस कर रही थीं। इसके अलावा, १.४ बिलियन की आबादी की सेवा करना अपने आप में एक कठिन कार्य है जब स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयुक्त प्रबंधन करने की बात आती है।

४. **सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति और सक्रिय स्वास्थ्य देखभाल:** नवीनतम राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (एनएचपी) २०१७ सस्ती कीमत पर सभी के लिए सुनिश्चित स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए "सभी के लिए स्वास्थ्य" दृष्टिकोण पर प्रकाश डालती है। हालांकि, एनएचपी २०१७ के तहत और भी बहुत कुछ करने की गुंजाइश है। आदर्श रूप से, सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति को सक्रिय स्वास्थ्य देखभाल की ओर केंद्रित करने की आवश्यकता है, न कि प्रतिक्रियाशील स्वास्थ्य सेवा की ओर

8. **पर्यावरण और स्थिरता:** तीव्र औद्योगीकरण और शहरीकरण ने पर्यावरण पर भारी दबाव डाला है। वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई और जैव विविधता का नुकसान गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जैसे चरम मौसम की घटनाएँ, भारत के कृषि और सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने को प्रभावित कर रही हैं। पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करना 21वीं सदी के भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है, जिसके लिए सामूहिक प्रयासों और स्थायी नीतियों की आवश्यकता है।

9. **सामाजिक आंदोलनों और पहचान की राजनीति:** 21वीं सदी में विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा न्याय और अधिकारों के लिए कई सामाजिक आंदोलनों का उदय हुआ है। दलितों, आदिवासियों, किसानों, महिलाओं और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने अपनी मांगों को लेकर आवाज उठाई है। पहचान की राजनीति भी प्रमुख रही है, जहाँ विभिन्न समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान और अधिकारों की मांग कर रहे हैं। इन आंदोलनों ने भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया है, लेकिन कभी-कभी सामाजिक ध्रुवीकरण को भी जन्म दिया है।

10. **सामाजिक सुरक्षा और कल्याणकारी राज्य की दिशा में:** भारत सरकार ने विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों जैसे मनरेगा, जन धन योजना, प्रधान मंत्री आवास योजना और स्वच्छ भारत अभियान को लागू किया है। इन योजनाओं का उद्देश्य गरीबों और वंचितों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना और उनकी जीवन स्थितियों में सुधार करना है। हालाँकि, इन योजनाओं के कार्यान्वयन में चुनौतियाँ, भ्रष्टाचार और लाभार्थियों तक पहुँच की कमी अभी भी बनी हुई है।

11. जनसंख्या

भारत में जनसंख्या खतरनाक दर से बढ़ रही है, जिससे अधिक जनसंख्या एक जरूरी और महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। भारतीय जल्द ही फटने वाले ओवरपॉपुलेशन बम की अनदेखी कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट (२०१५) के अनुसार, भारतीयों का पांचवां हिस्सा गरीबी रेखा से नीचे रह रहा है और लगभग एक चौथाई भारतीय

आजादी के ७३ साल बाद भी निरक्षर हैं। अधिक जनसंख्या की समस्या मुख्य रूप से गरीब और विकासशील देशों में प्रचलित है। अशिक्षा और गरीबी का परस्पर संबंध है। जहां निरक्षरता है, वहां गरीबी है और इसके विपरीत। सरकार कई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश बढ़ा रही है।

भारत में अधिक जनसंख्या एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा है। यह बहुत तेजी से बढ़ रहा है। जनसंख्या में इस तरह की वृद्धि भारत के आर्थिक विकास का एक निराशाजनक पहलू है। जनसंख्या वृद्धि ने भोजन, कपड़े, रोजगार और आश्रय की कमी जैसी कई समस्याओं को जन्म दिया है, और संसाधनों की मांग चरम पर है।

अधिक जनसंख्या के कारण:-

१. **निरक्षरता**- चूंकि भारत में साक्षरता दर अल्प है; लोग जनसंख्या विस्फोट से अनजान हैं। लोगों को परिवार नियोजन के बारे में कोई जानकारी नहीं है जो जनसंख्या में वृद्धि करता है।

२. **एक लड़के की जरूरत**- जैसा कि हमारे भारत में, एक लड़की की तुलना में एक बेटे को बहुत प्राथमिकता दी जाती है। मान्यता है कि बेटा सभी धार्मिक संस्कार करेगा। इसलिए एक पुरुष बच्चे को पाने के लिए, लोग बेटियों को जन्म देते हैं, अंततः जनसंख्या में वृद्धि करते हैं।

निष्कर्ष :

१. २१वीं सदी में भारत ने आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है, लेकिन सामाजिक असमानता और गरीबी अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

२. जातिगत भेदभाव और सांप्रदायिक तनाव पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए हैं और समय-समय पर सामाजिक विभाजन का कारण बनते रहते हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

३. महिला सशक्तिकरण ने गति पकड़ी है, लेकिन लैंगिक हिंसा, भेदभाव और असमान प्रतिनिधित्व अभी भी व्यापक मुद्दे हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

४. शहरीकरण ने नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इसने बुनियादी ढाँचे, पर्यावरण और सामाजिक संरचनाओं पर भी भारी दबाव डाला है, जिससे शहरों में रहने योग्य स्थिति प्रभावित हुई है।

५. डिजिटलीकरण ने सूचना तक पहुँच को सुगम बनाया है और विकास को बढ़ावा दिया है, लेकिन डिजिटल डिवाइड और साइबर सुरक्षा चिंताएँ भी बढ़ी हैं।

६. शिक्षा तक पहुँच में सुधार हुआ है, लेकिन गुणवत्ता, कौशल विकास की कमी और रोजगारपरकता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है, जिससे युवा बेरोजगारी बढ़ रही है।

७. स्वास्थ्य सेवा में प्रगति के बावजूद, ग्रामीण क्षेत्रों में और कमजोर वर्गों के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच अभी भी एक मुद्दा है, और कुपोषण एक गंभीर समस्या है।

८. पर्यावरणीय क्षरण और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव भारतीय समाज पर एक गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं, जिसके लिए तत्काल और स्थायी समाधान की आवश्यकता है।

९. सामाजिक आंदोलनों ने हाशिए पर पड़े समुदायों की आवाज़ को बुलंद किया है, लेकिन पहचान की राजनीति कभी-कभी सामाजिक ध्रुवीकरण और तनाव को बढ़ा सकती है।

१०. भारत एक मजबूत कल्याणकारी राज्य की ओर बढ़ रहा है, लेकिन सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन और भ्रष्टाचार को कम करने की आवश्यकता है ताकि उनका अधिकतम लाभ वंचितों तक पहुँच सके।

संदर्भ सूची:

पुस्तकें:

१. Dreze, Jean, and Amartya Sen. *An Uncertain Glory: India and Its Contradictions*. Princeton University Press, २०१३.

२. Kumar, Ravinder. *Social History of India*. Vikas Publishing House, २०१६.

३. घोष, ए., और एसविकास के लिए जल "भारत में स्वच्छता की असमान प्रगति।" .केयर्नक्रॉस ., स्वच्छता और स्वच्छता के जर्नल, खंड ४, नंबर १, २०१४

४. पोप, जेरेमीराष्ट्रीय अखं एक :भ्रष्टाचार का सामना .डता प्रणाली के तत्व। बर्लिन, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल, २०००।

५. सिंह, एममानविकी :प्रभाव "ग्रामीण भारत में स्वच्छता।" .के., कला और साहित्य में अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड २, २०१४

रिपोर्ट:

1. "Economic Survey of India Report 2020-21 ." Ministry of Finance, Government of India.
2. "India Human Development Report 2022 ." UNDP (United Nations Development Programme).

इंटरनेट साधन :

१. www.scholar.google.com
२. www.jstor.org
३. www.orfonline.org
४. www.shodh.net